हिन्दी पाठ-३

मातृभाषा हिन्दी

कक्षा - ३

शिक्षक शिक्षा निदेशालय तथा राज्य शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद, ओड़िशा, भुवनेश्वर

ओड़िशा विद्यालय शिक्षा कार्यक्रम प्राधिकरण, भुवनेश्वर

हिन्दी पाठ-३

मातृभाषा हन्दी

कक्षा - ३

पाठ्यपुस्तक निर्माण समिति

प्रो. डॉ राधाकान्त मिश्र

डॉ स्नेहलता दास

डॉ सनातन बेहेरा

डॉ लक्ष्मीधर दाश

डॉ अजित प्रसाद महापात्र

श्री आशीष कुमार राय

संयोजिका :

डॉ. तिलोत्तमा सेनापति

डॉ. सविता साहु

प्रकाशक :

विद्यालय और गणशिक्षा विभाग,

ओड़िशा सरकार

प्रथम संस्करण : २०१७

२०१९

प्रस्तुति :

शिक्षक शिक्षा निदेशालय तथा राज्य शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद ओड़िशा, भुवनेश्वर

और

ओड़िशा राज्य पाठ्यपुस्तक प्रणयन और प्रकाशन संस्था, भुवनेश्वर

मुद्रण : पाठ्यपुस्तक उत्पादन और विक्रय, भुवनेश्वर

आइए, ऐसा करें

इस नए पाठ्यक्रम में कई तब्दिलियाँ की गई हैं। पहली है दृष्टिकोण में भिन्नता। अब शिक्षक शिक्षा प्रदान करने की तुलना में विद्यार्थी द्वारा स्वयं सीखने के प्रयास पर जोर दें। भाषण कम करें। विद्यार्थियों को बोलने का मौका दें। उदाहरणार्थ–स्वयं गद्य / पद्य का आदर्श वाचन कर दें, फिर विद्यार्थियों द्वारा उस कार्य को कराएं। लेखन-शैली बता दें, फिर लिखवाएं। वाद-विवाद, तर्कसभा, नाटकीय संवाद आदि अधिक, करवाएं। लघु निबंध, छोटे-छोटे अनुच्छेद-लेखन, पत्र, आवेदन पत्र, सरकारी दफ्तरों में प्रचलित पत्रों आदि पर अभ्यास कराए जाएं।

दूसरी बात है–भाषा-शिक्षण पर अधिक बल देना है। इसलिए हर पाठ के उपरांत लंबी अनुशीलनियाँ दी गई हैं। उनके आधार पर शिक्षक अपनी तरफ से भी नई प्रश्न-शैलियों का प्रयोग कर सकते हैं और विद्यार्थियों द्वारा अभ्यास करवा सकते हैं। फिर साहित्य पर ध्यान दें । इससे बच्चों की रुचि परिमार्जित होती है और मानवीय - वृत्तियों का पोषण-पल्लवन होता है।

तीसरी बात है- मूल्यांकन-शैली में परिवर्तन। विद्यार्थियों के मस्तिष्क से परीक्षा का भय दूर किया जाए। पाठ को रटने की अपेक्षा सृजनात्मक, व्यक्तिगत लेखन अधिक महत्व रखता है। साल में दो-एक परीक्षा के महत्व को कम करके तात्कलिक / सावधिक परीक्षाएँ अधिक संख्या में हों। सबका मूल्यांकन अंतिम परिणाम में प्रतिफलित हो।

शिक्षकों से अनुरोध है कि वे पाठ्यपुस्तक को पहले देख लें, इसके दृष्टिकोण, कर्म, कार्य-शैली का अनुध्यान करके अपनी शिक्षा-शैली बनाएं। शिक्षक तथा विद्यार्थियों की सक्रियता से भाषा- शिक्षण सरस होता है।

हिन्दी हमारी राष्ट्रभाषा तथा राजभाषा है। इसे सीखना प्रत्येक नागरिक का सांविधानिक कर्तव्य है। यह सारे देश के जन-जन में योगसूत्र स्थापित करने की भाषा है। इसे सीखने में रेडियो, टेलीविजन, इंटरनेट आदि आधुनिक माध्यमों का भी उपयोग किया जाए। क्योंकि ये शिक्षण के सरल और सशक्त साधन हैं। यह पाठ्यपुस्तक इन सभी का आधार प्रस्तुत करती है।

शिक्षकों, अभिभावकों के सहयोग और साधनों के उपयोग से हिन्दी भाषा का अध्ययन काफी सरस हो सकता है।

विषय - सूची

क्रम संखा	विषय		पृष्ठ
१.	दीप से दीप जलाओ	(कविता)	१
२.	मेरे पीछे कौन है	(कहानी)	४
३.	ओड़िआ लोक कथा	(पढ़ने के लिए)	८
४.	कूएँ का मेंढ़क	(कविता)	१०
५.	जैसा सवाल वैसा जवाब	(कहानी)	१४
६.	आओ गिनती का गीत गुनगुनाएँ	(पढ़ने के लिए)	१७
७.	भारी भूल	(कविता)	१८
८.	बंदर-बाँट	(एकांकी)	२१
९.	शेखीबाज मक्खी	(कहानी)	२९
१०.	माथापच्ची	(मनोरंजन के लिए)	३२
११.	हिमालय	(कविता)	३३
१२.	घास की रोटियाँ	(कहानी)	३६
१३.	रास्ता ढूँढो	(मनोरंजन के लिए)	४०
१४.	कौन	(कविता)	४१
१५.	अर्जुन का अभ्यास	(कहानी)	४५
१६.	मन के भोले-भाले बादल	(कविता)	४९
१७.	बाजि राउत	(पढ़ने के लिए)	५२
१८.	मन करता है	(कविता)	५४
१९.	पौधों का जीवन	(कहानी)	५७
२०.	राम का राज्याभिषेक	(पढ़ने के लिए)	६३

दीप से दीप जलाओ

आज दीप से दीप जलाओ,
दीपों का त्योहार मनाओ।

फिर से दिवस सुहाना आया,
लहरों जैसा मन लहराया,
दीवाली की धूमधाम से,
मन भी फूला नहीं समाया।

फूलों जैसे हँसो-हँसाओ,
दीपों का त्योहार मनाओ।

भीतर-बाहर जगमग सारा
चारों तरफ हुआ उजियारा,
दीपों से घर सज गए सारे
कितने सुंदर कितने न्यारे।

फुलझड़ी और अनार छुड़ाओ,
दीपों का त्योहार मनाओ।

सजे हुए बाजार चहकते,
घर-घर बंदनवार महकते।
फुलझड़ियों की छटा देखकर,
बच्चे चारों ओर फुदकते।

हँसी-खुशी के गीत सुनाओ,
दीपों का त्योहार मनाओ।

अभ्यास

समझो	भीतर- अन्दर
दीप-दीया	महकते- खुशबू फैलते
त्योहार- पर्व	छटा- शोभा
धूमधाम-पुरे जोश के साथ चहल पहल	न्यारे - अपूर्व

१. देखो तुमने क्या सीखा :

(क) किस त्योहार में दीप जलाए जाते हैं ?

(ख) घर की सफाई और सजावट क्यों जरूरी है ?

(ग) दीपावली बच्चों को क्यों अच्छी लगती है ?

(घ) दीपों के त्योहर को सुहाना पर्व क्यों कहा जाता है ?

२. वाक्य बनाओ :

सुहाना, कूल, दीप, त्योहार, बाजार

३. समझो और लिखो :-

(नीचे दिए गए शब्दों की सहायता से विलोम शब्दों के सही जोड़े बनाओ)

दिवस - रात्रि

उजाला - ____________________

भीतर - ____________________

सुन्दर - ____________________

आया - ____________________

४. आया त्योहार :-

(क) दीपावली की तरह दशहरा, होली भी बड़े-बड़े त्योहार हैं। इन त्योहारों को तुम कैसे मनाते हो-कविता में लिखो।

(ख) दीवाली के त्योहार का एक चित्र बनाओ।

मेरे पीछे कौन है

7H2RHN

बबलू भुवनेश्वर में रहता है। अच्छा पढ़ता है। एक बार रेलगाडी से वह अपने गाँव चला। वह बहुत खुश था। परिवार वालों से, दोस्तों से मिलने को उतावला हो रहा था। आँखों के आगे गाँव के सारे नजारे नाचने लगे। तभी गाड़ी स्टेशन पर पहुँच गई।

शाम हो चली थी। बबलू स्टेशन से निकला। उसे पैदल ही गाँव की तरफ जाना था। दो किलोमीटर का लंबा रास्ता। रास्ता कच्चा था। दोनों तरफ झाड़-झंखाड़ । बबलू ने सोचा-जल्दी से भागकर चला जाऊँगा। रास्ते में अँधेरा हो गया तो ? वह हिम्मत करके आगे बढ़ा। मुश्किल से आधा किलोमीटर चला होगा कि अँधेरा छाने लगा। एक जगह उसे पत्तों की सरसराहट सुनाई दी। उसने सोचा सुखे पत्तों की आवाज। दो चार कदम गया नहीं कि फिर वही आवाज। उसे लगा-हो-न-हो कोई उसका पीछा कर रहा है। उसने पीछे पलट कर देखा। पीछे उसे एक परछाईं सी दीखी। क्या यह कोई भूत है जो मेरा पीछा कर रहा है- उसने सोचा।

बबलू ने चाल तेज कर दी। लेकिन इतने में फिर पीछे से किसी के चलने की आहट सुनाई दी। वह डर गया। उसकी साँसें फूलने लगी। डर के मारे उसके कदम आगे नहीं बढ़ रहे थे। तभी-उसे याद आया कि भूत-बूत कुछ नहीं होता। भूत तो मन का वहम होता है। अब वह हिम्मत करके आगे बढ़ा। उसने देखा कि जमीन पर एक डंडी पड़ी है। उसने डंडी को उठा लिया। धीरे धीरे पेड़ के पीछे हो लिया। इन्तजार करने लगा कि कब फिर वह आवाज आएगी। वह मन में गिनने लगा- एक दो तीन चार इतने में फिर वही आवाज सुनाई दी। बबलू ने न आव देखा न ताव, सटाक से उसे डंडी से दे मारा। अब वह तेजी से भागा। बेतहासा गाँव की तरफ। दौड़ते-दौड़ते वह हाँफने लगा। दूर से गाँव की बत्तियाँ दिखने लगींतो वह एक चट्टान पर बैठ गया। सोचने लगा- मैं बेवूकफ भी हूँ और डरपोक

भी। शाम के अँधेरे में क्यों चल पड़ा। अगर चल निकला तो डर किसका। वह हिम्मत करके पीछे की ओर ताकने लगा। कोई आ रहा है क्या ? नहीं,कोई नहीं था। अगर कोई होता तो अब तक आ गया होता। लगता है,उस पर जोर की मार पड़ी। बेचारा ! इतने में बबलू ने देखा कि कोई लँगड़ाते हुए उसकी तरफ आ रहा है। वह दर्द से कराह रहा है। बबलू! ओ बबलू। बबलू को यह आवाज सुनाई पड़ी। तब तक उसका दोस्त अमर पास पहुँच गया। अमर ने कहा-बबलू ! तू तो बड़ा डरपोक है-रे। मैं तुझे लेने स्टेशन गया था। जरा देर हो गई। तुझसे मुलाकात न हो पाई । मैं पीछे-पीछे आ रहा था। मगर तूने मुझे पहचाना नहीं। अंधेरे में तूने जो डंडी घुमाई वह मुझे लगी। पैर में चोट आई। खैर अब घर चल।

डा. स्मरप्रिया मिश्र

अभ्यास

समझो

नजारे - दृश्य

पलटकर - मुड़कर

रास्ता-राह, सड़क

वहम - भ्रम

उतावला - उत्सुक, अधीर, बेचैन

परछाईं - छाया

बेवकूफ - मूर्ख

१. देखो तुमने क्या सीखा :

क) बबलू गाँव किसलिए जा रहा था ?

ख) बबलू अँधेरे में चलने से क्यों डर रहा था ?

ग) अँधेरे में बबलू की कैसी हालत हो गई थी ?

घ) बबलू ने किसे डंडी से दे मारा और क्यों ?

ङ) अमर को देखकर बबलू को कैसा लगा होगा ?

२. पढ़ो, समझो और दिए गए शब्दों की सहायता से खाली स्थान भरो-

(धरती, ग्राम, मकान, साहस)

घर, गाँव, हिम्मत, जमीन

__________, __________, __________, __________

३. जोड़े मिलाओ

क) गाँव	(क) लगा
ख) हाँफने	(ख) रास्ता
ग) लंबा	(ग) दीखी
ङ) परछाईं	(ङ) गया

४. पुस्तक से सही शब्द चुनकर वाक्य पुरे करो-

(क) शाम हो————– थी।

(ख) बबलू भुवनेश्वर ————– रहता है।

(ग) जमीन पर ————– पड़ी है।

(ङ) मैं तुझे ——— गया था।

५. कुछ करो -

- जंगल का एक चित्र बनाओ।
- जंगल की चीजों के नाम लिखो।

ओड़िआ लोक कथा

एक गाँव में माँ-बेटे दोनों रहते थे। बेटा घर-घर जाकर भीख माँग लाता था। दोनों उसीसे पेट भर लेते थे। लेकिन रोज-रोज के भिखारी को कौन भीख देता। वे भूखे रहने लगे। एक दिन वे दोनों गाँव के बाहर चल पड़े। वे चलते चले जा रहे थे।

रास्ते में एक सुंदर तालाब मिला। उसका पानी साफ था। कमल के फूल खिले थे। सीढ़ियों का घाट बना था। बेटा बड़ा भूखा था। वह सीढ़ी पर बैठ गया। चुल्लू में पानी भर-भर पीने लगा। कहता जाता था-

भात खाऊँ, दाल खाऊँ, सब्जी खाऊँ, पीठा खाऊँ, खीर खाऊँ

कहने के साथ साथ हर बार एक चुल्लू पानी पीता था।

7HBMJB

उस सरोवर में लक्ष्मी जी रहती थीं। उन्होंने सोचा यह बेचारा बड़ा भूखा है। उन्होंने भोजन की एक हाँड़ी भरकर उस पर पत्तल ढंक कर उसकी तरफ बहा दी। हाँड़ी लहरों पर तैरती हुई बेटे के पास आई। उसने पत्तल उठाई तो- देखा बढ़िया भोजन है। वह बहुत खुश हुआ।

हाँडी उठाकर माँ के पास भागा। माँ भी खुश हुई। कई दिन इस प्रकार चलता रहा।

एक दिन लक्ष्मी जी ने सोचा- अरे, यह लड़का तो कामचोर बन गया। कुछ करता-धरता नहीं, सिर्फ खाने को ललचाता है। इसे तो अच्छी-सी सीख देनी होगी। सो अगले दिन जब लड़के ने हाँड़ी

से पत्तल हटाई तो उसपर खूब मार पड़ी। उसने फौरन हाँडी पर पत्तल ढाँक दी। अब कुछ नहीं हुआ। वह हाँडी लेकर घर गया। माँ के पास रख दिया। माँ ने खाने के लालच में पत्तल हटाई तो उसका भी बुरा हाल हुआ। उसने हाँड़ी उठाई और घर के पिछवाड़े रख आई।

उस दिन रात को चोर गाँव में आए। वे घर के पीछे बैठकर चुराए गए माल का बँटवारा करने लगे। किसीने हाँडी से पत्तल को अलग कर झाँका। सब पर खूब मार पड़ी।

सुबह गाँववाले आए। अपना-अपना माल पहचाना। सभी ने कुछ कुछ रुपये लड़के को दिए। लड़के ने सोचा इन रुपयों से खाना खाऊँगा। कुछ काम करने का उपाय भी करूँगा।

अब लड़का काम करने लगा। दोनों माँ-बेटे खुशी से रहने लगे।

कूएँ का मेंढ़क

7HKIKY

एक कुएँ में रहता था
मेंढ़क का साझा परिवार
दादा मेंढ़क, दादी मेंढक
मात-पिता और बच्चे चार।

सीमित इन लोगों की दुनिया
सबसे प्यारी छोटी मुनिया
निकली नहीं कभी थी बाहर
छोड़ अपना छोटा सा घरबार।

एक बार आया एक हाथी
रोबदार उसकी कद-काठी
मुनिया ने देखा तो डरकर
आँख मीचकर भागी अंदर।

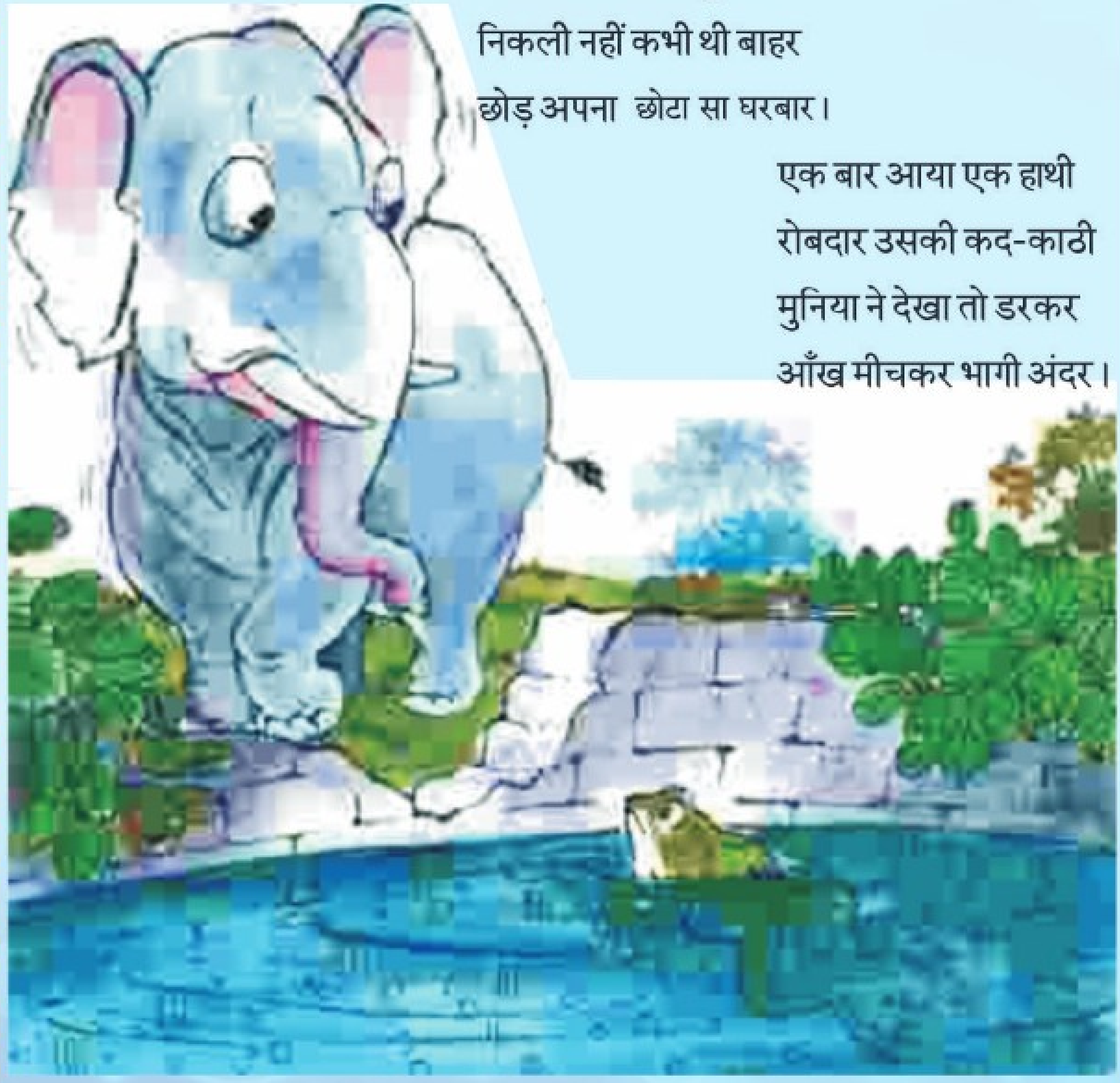

बतलाया दादी को जाकर
टर्र -टर्र का अलख जगाकर
एक अजब प्राणी है आया
बड़ी बहुत है जिसकी काया।

दादी ने तब गाल फुलाए
अनुभव के जौहर दिखलाए
पूछा-क्या इतना विशाल है
दादी जितना बड़ा गाल है ?

बोली नन्ही - और बड़ा है
पानी पीकर पास खड़ा है
तल की मेंढ़की लगी मुहाने
हवा से खुद का पेट फुलाने।

फुल के कुप्पा हो गया तन
भरा कहाँ पोती का मन ?
रही बोलती - और बड़ा...
तभी उदर वह फूट पड़ा !

छा गया मिनटों में मातम
आ पहुँचा लेने को यम
आखिर तक मानी न हार
जिद में दादी गई सिधार ।

अभ्यास

समझो

कुएँ का मेंढक - कूप मंडूक

साझा - मिला जुला

प्यारी- खुबसूरत, अच्छी

उदर - पेट

सिधार - मृत्यु होना

रोबदार - जिसकी आधिक धाक हो

कदकाठी - आकार प्रकार

काया - शरीर

जौहर - करतब

विशाल - बहुत बड़ा

१. देखें तुमने क्या सीखा -

(क) कुएँ में कौन कौन रहते थे ?

(ख) मुनिया क्यों डर गई ?

(ग) हाथी देखने में कैसा था ?

(घ) दादी ने अपना पेट कैसे फुलाया ?

(ङ) पेट फुलाने से दादी का क्या हाल हुआ ?

२. वाक्य बनाओ।

मेंढक, दादी, बच्चा, दुनिया, रोबदार, आँख ।

३. सही शब्द चुनकर खाली स्थान भरो-

(थे, है, हैं, था)

(क) कुएँ में एक मेंढ़क रहता————।

(ख) उसके चार बच्चे ————।

(ग) हाथी बहुत बड़ा ————।

(घ) हाथी और उसके बच्चे इधर आ रहे ————।

४. सोचो :

- इस कविता को कहानी बनाकर अपने मित्रों को सुनाओ।
- इस कविता को कक्षा में या घर पर साथियों के साथ नाटिका के रूप में प्रस्तुत करो।

जैसा सवाल वैसा जवाब

7HUEML

बादशाह अकबर अपने मंत्री बीरबल को बहुत पसंद करते थे । बीरबल की बुद्धि के आगे बड़े-बड़ों की भी कुछ नहीं चल पाती थी। इसी कारण कुछ दरबारी बीरबल से जलते थे। वे बीरबल को मुसीबत में फँसाने के तरीके सोचते रहते थे।

अकबर के एक खास दरबारी ख्वाजा सरा को अपनी विद्या बुद्धि पर बहुत अभिमान था। बीरबल को तो वे अपने सामने निरा बालक और मूर्ख समझते थे। लेकिन अपने ही मानने से तो कुछ होता नहीं! दरबार में बीरबल की ही तूती बोलती और ख्वाजा साहब की बात ऐसी लगती थी जैसे नक्कारखाने में तूती की आवाज। ख्वाजा साहब की चलती तो वे बीरबल को हिंदुस्तान से निकलवा देते लेकिन निकलवाते कैसे !

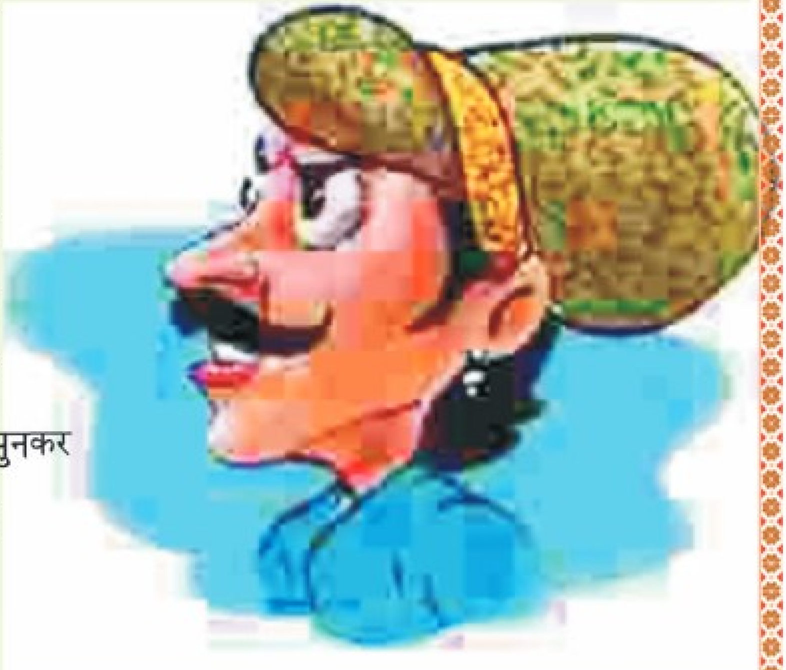

एक दिन ख्वाजा ने बीरबल को मूर्ख साबित करने के लिए बहुत सोच-विचार कर कुछ मुश्किल प्रश्न सोच लिए । उन्हें विश्वास था कि बादशाह के सामने उन प्रश्नों को सुनकर बीरबल के छक्के छूट जाएँगे और

वह लाख कोशिश करके भी संतोषजनक उत्तर नहीं दे पाएगा। फिर बादशाह मान लेंगे कि ख्वाजा सरा के आगे बीरबल कुछ नहीं है।

ख्वाजा साहब अचकन - पगड़ी पहनकर दाढ़ी सहलाते हुए अकबर के पास पहुँचे और सिर झुकाकर बोले, ''बीरबल बड़ा बुद्धिमान बनता है। आप भी उसकी लंबी- चौड़ी बातों के धोखे में आ जाते हैं। मैं चाहता हूँ कि आप मेरे तीन सवालों के जवाब पूछकर उसके दिमाग की गहराई नाप लें। उस नकली अक्ल-बहादुर की कलई खुल जाएगी।''

ख्वाजा के अनुरोध करने पर अकबर ने बीरबल को बुलाया और उनसे कहा, ''बीरबल! परम ज्ञानी ख्वाजा साहब तुमसे तीन प्रश्न पूछना चाहते हैं। क्या तुम उनके उत्तर दे सकोगे ?''

बीरबल बोले, '' जहाँपनाह ! जरूर दूँगा। खुशी से पूछें।''

अकबर ने बीरबल से ख्वाजा का पहला प्रश्न पूछा, ''संसार का केंद्र कहाँ है ?''

बीरबल ने तुरंत जमीन पर अपनी छड़ी गाड़कर उत्तर दिया, ''यही स्थान चारों ओर से दुनिया के बीचों-बीच पड़ता है। यदि ख्वाजा साहब को विश्वास न हो तो वे फीते से सारी दुनिया को नापकर दिखा दें कि मेरी बात गलत है।'' अकबर ने दूसरा प्रश्न किया, '' आकाश में कितने तारे हैं ?''

बीरबल ने जवाब दिया - भेड़ की खाल पर जितने रोएँ हैं । बादशाह सलामत किसी भेड़ के बाल गिनाकर देख लें। बादशाह ने कहा – ख्वाजा का तीसरा सवाल है – संसार की आबादी कितनी है? बिरबल ने तुरंत जवाब दिया – जंगल में जितने पेड़ खड़े हैं। बादशाह तीनों जवाबों को सुनकर खुश हुए। उन्होंने ख्वाजा को हुकम दिया कि-बीरबल काफी चालाक आदमी है। उसे तंग न करना।

अभ्यास

समझो नक्कार खाना - नगाडा बजने का स्थान
नक्कार खाने में तुती की आवाज - बडों के सामने छोटों की बात कोई नहीं सुनता

पसन्द करना - चाहना	विश्वास- भरोसा
अभिमान - गर्व	बुद्धिमान - चालाक
मूर्ख - अज्ञानी	कोशिश- चेष्टा
इकट्ठा - एकत्र	दुनिया - संसार

१. देखें तुमने क्या सीखा -

(क) ख्वाजा सरा के तीनों सवालों के बीरबल ने क्या क्या उत्तर दिए ?

(ख) ख्वाजा सरा बीरबल से ईर्ष्यो क्यों करता था ?

(ग) बीरबल ने संसार का केन्द्र कहाँ बताया ?

(घ) आकाश में स्थित तारों की तुलना बीरबल ने भेड़ के बालो से क्यों की ?

(ङ) क्या तुम प्रमाणित कर सकते हो कि बीरवल बुद्धिमान था ?

३. पाठ के आधार पर वाक्यों को पुरा करो-

(कहाँ, कितनी, कितने, जवाब)

(क) आकाश में ————- तारे हैं।

(ख) संसार का केंद्र ————- है।

(ग) संसार की आबादी ______- है।

(घ) बीरवल ने ______- दिया।

३. नीचे लिखे शब्दों के स्थान पर हम और किस शब्द का प्रयोग कर सकते है

हिन्दुस्तान ____________।   साबित ____________।

मुश्किल ____________।   मुसीबत ____________।

४. कुछ करो

यह कहानी तुम्हें क्यों अछी लगी ? उसे अपने छोटे भाई बहनों को सुनाओ।

५. कहानी आगे बढ़ाओ

एक दिन बीरबल ने अकबर से कहा-महाराज! बाल हठ बहुत बुरा होता है। तो वे नहीं माने। फिर बीरबल ने क्या किया होगा - कहानी आगे बढ़ाओ।

आओ गिनती का गीत गुनगुनाएँ :

दस छोटी चिड़ियाँ रहीं पेड़ पर सो
एक चिड़िया उड़ गई, रह गईं अब नौ।
नौ छोटी चिड़ियाँ पढ़ रही थीं पाठ
एक चिड़िया उड़ गई, रह गईं अब आठ।

आठ छोटी चिड़ियाँ बोलीं अपनी बात
एक चिड़िया उड़ गई, रह गईं अब सात।
सात छोटी चिड़ियाँ चीं- करतीं तब
एक चिड़िया उड़ गई, रह गईं छहअब।

छह छोटी चिड़ियाँ देख रही थीं आँच
एक चिड़िया उड़ गई, रह गईं अब पाँच।
पाँच छोटी चिड़ियाँ पढ़तीं थी अखबार
एक चिड़िया उड़ गई, रह गईं अब चार।

चार छोटी चिड़ियाँ बजा रही थीं बीन
एक चिड़िया उड़ गई, रह गईं अब तीन।
तीन छोटी चिड़ियाँ बोलीं- ''कैसे हो ?''
एक चिड़िया उड़ गई, रह गईं अब दो

रहीं छोटी चिड़ियाँ दोनों थीं वे नेक
एक चिड़िया उड़ गई, रह गई अब एक।
एक छोटी चिड़िया अकेली-जब हो गई।
वह भी जब उड़ चली रही नहीं अब कोई।

भारी भूल

एक बाग में थे गुलाब के पौधे प्यारे -प्यारे
फूल खिले थे उनमें कितने लाल गुलाबी न्यारे।।
उस दिन बड़े सवेरे मोहन उस बगिया में आया।
लख गुलाब की सुंदरता उसका मन भरमाया।।
लाल रंग का फूली डाली पर देख बहुत ललचाया।
'क्यों न तोड़ लूँ इसे' सोचकर उसने हाथ बढ़ाया।।
किन्तु 'अरे' कहकर झटके से उसने हाथ सिकोड़ा।
एक टीस ने उसके मन को बार-बार झकझोरा।।
उँगली में कुछ चुभा कि जिससे खून झलक आया।
उधर फूल के लालच ने भी उसको बहुत छकाया।।
उसे सुनाई पड़ा कि जैसे कोई बोल रहा था।
'फूल पेड़ की शोभा, तू क्यों इनको तोड़ रहा था ?।
तोड़ोगे मुरझा जाएगा, सूख बिखर जाएगा फूल।
दो दिन की ही शोभा है, फिर पल में झड़ जाएगा फूल !
नहीं देख पाए क्या अब भी, झाँको पत्तों के नीचे।
मैं काँटा हूँ, पहरा देता छिपा फूल के ही पीछे।
मोहन ने तब देखा काँटा और किया हँस नमस्कार।
उचित कहा है तुमने काँटे, ओ फूलों के पहरेदार !
बात तुम्हारी याद रखूँगा, तोड़ा नहीं करूँगा फूल।
खिले फूल को व्यर्थ तोड़ना सचमुच ही है भारीभूल।

अभ्यास

समझो

सवेरे- प्रात : काल	टीस - दर्द
भरमाया - भ्रम में पड़ा	झलकना- दिखाई देना
सिकोड़ा- समेट लिया	बिखरना- फैल जाना

१. देखें तुमने क्या सीखा :

(क) मोहन ने बाग में क्या देखा ?

(ख) मोहन के हाथ से खून कैसे निकला ?

(ग) काँटे ने मोहन से क्या कहा ?

(घ) मोहन की भारी मूल क्या थी ?

(ङ) गुलाब के फूलों का पहरेदार कौन था ? उसने मोहन से क्या कहा ?

२. नीचे लिखे शब्दों का अर्थ लिखकर उन्हें वाक्य में प्रयोग करो :

नमस्कार, फूल, भूल, झलक

३. प्रत्येक वाक्यांश को एक शब्द में लिखो :

बिना कारण - ——————————।

पहरा देनेवाला- ——————————-।

जो सुरक्षित न हो ———————————-।

जो सुन्दर न हो ——————————।

४. सही पढ़ो, सही लिखो।

काँटा, खुश, झड़, व्यर्थ

५. कैसे समझाओगे :

- चलो देखते हैं इस कविता के कुछ वाक्य बिना बोले तुम कैसे समझाओगे ?
- नीचे दिए गए वाक्यों को पढ़ो, और अपने हावभाव से इसे अभिव्यक्त करो।
- मेरा फूल तोड़ने का मन कर रहा है।
- अरे ! फूल तोड़ते समय तो मेरे हाथ में काँटे चुभ गए।
- यहाँ तो कोई नहीं है, फिर ये आवाज कहाँ से आ रही है।
- इसको हँस लेने दे।
- मैं काँटा हूँ।
- तुम्हारी बात याद रखूँगा, फिर कभी बिना वजह फूल नहीं तोड़ूँगा।
- मुझसे गलती हो गई, माफ कर दो।

बंदर - बाँट

7IM2SJ

स्थान : खुली जगह या कोई बड़ा कमरा।

पात्र : एक बंदर और दो बिल्लियाँ। सात- आठ बरस का लड़का बंदर और पाँच - छह बरस की लड़कियाँ बिल्ली बन सकती हैं।

बंदर के लिए पोषाक : पीला चूड़ीदार पाजामा, कुर्ता और दुपट्टा, जो कमर में पूँछ-सी निकालकर बाँधा जा सकता है। मुँह पर लगाने के लिए बंदर का चेहरा,जिसमें आँखों और मुँह की जगह छेद हों।

बिल्लियों के लिए पोषाक : काली सफेद सलवारें, कमीजें, दुपट्टे,जो कमर में पूँछ-सी निकालकर बाँधे जा सकते हैं। मुँह पर लगाने के लिए काली-सफेद बिल्लियों के चेहरे,जिनमें आँखों और मुँह की जगह बड़े छेद हों जिनसे देखा-बोला जा सके।

सामान : एक मेज, एक बड़ा मेजपोश या बड़ी चादर, डबलरोटी का एक टुकड़ा, एक छोटा तराजू।

(पहला दृश्य-कोई कमरा)

(कमरे के बीच में एक मेज है जिस पर मेजपोश पड़ा है,जो कि आगे से ढका है। मेज पर एक, रोटी का टुकड़ा है। मेज के नीचे एक तराजू रखा है, पर दिखाई नहीं देता)

(म्याऊँ-म्याऊँ की आवाज होती है और दाहिनी तरफ से काली बिल्ली और बाईं तरफ से सफेद बिल्ली प्रवेश करती हैं।)

काली बिल्ली : बिल्ली बहन, नमस्ते!

सफेद बिल्ली : नमस्ते बहन, नमस्ते !

काली बिल्ली : अच्छी तो हो ?

सफेद बिल्ली : अच्छी क्या हूँ, भूखी हूँ!

काली बिल्ली : मैं भी भूखी हूँ।

सफेद बिल्ली : खाने को कुछ ढूँढ रही हूँ।

काली बिल्ली : उस खोज में मैं भी निकली हूँ।

सफेद बिल्ली : मुझे महक रोटी की आती।

काली बिल्ली : हाँ, मेरी भी नाक बताती, पास कहीं है।

सफेद बिल्ली : रखी मेज पर है वो रोटी।

लपकूँ ? कोई आ न जाए तो....

काली बिल्ली : तू डर, मैं तो लेने चली....

(काली बिल्ली लपकती है और रोटी लेकर भागने लगती है)

सफेद बिल्ली : ठहर, कहाँ भागी जाती है रोटी लेकर, रोटी मेरी।

काली बिल्ली : रोटी तेरी ! कैसे तेरी ? रोटी मेरी।

सफेद बिल्ली : मैं न दिखाती तो तू जाती ?

काली बिल्ली : अच्छा, क्या मैं खुद न देखती ?

क्या मेरी दो आँखें नहीं हैं ?

डरती थी उस तक जाने में !

जा डरपोक कहीं की, जा भाग, रोटी मेरी।

सफेद बिल्ली : रोटी, कहे दे रही, मेरी।

मैं ले जाने तुझे न दूँगी।

काली बिल्ली : देख, राह से मेरी हट जा।
ले जाऊँगी, तुझे न दूँगी।

सफेद बिल्ली : देखूँ, कैसे ले जाती है !
जो पहले देखे हक उसका है रोटी पर !

काली बिल्ली : पहले दौड़े, दौड़ के ले ले पहले उसका
हक रोटी पर। रोटी पर पहला हक मेरा।

सफेद बिल्ली : मैं कहती हूँ, रोटी मेरी।

काली बिल्ली : मैं कहती हूँ, रोटी मेरी।

(दोनों झगड़ती है, 'रोटी मेरी', 'रोटी मेरी' कहकर एक-दूसरे पर गुर्राती हैं)

(बंदर का प्रवेश)

बंदर : क्यों तुम दोनों झगड़ रही हो ? तुम कहती हो रोटी मेरी। (सफेद बिल्ली से) तुम कहती हो रोटी मेरी। (काली बिल्ली से) रोटी किसकी ? मैं इसका फैसला करूँगा। चलो कचहरी, मेरे पीछे-पीछे आओ।

(बंदर दोनों से छीनकर रोटी अपने हाथ में लेकर चलता है, दोनों बिल्लियाँ पीछे-पीछे जाती हैं)

(दूसरा दृश्य- बंदर की कचहरी)

(बंदर मेज पर बैठा है। रोटी का टुकड़ा सामने रखा है। दोनों बिल्लियाँ मेज के सामने इधर-उधर खड़ी हैं।

बंदर (सफेद बिल्ली से)	:	बोलो, तुमको क्या कहना है ?
सफेद बिल्ली	:	श्रीमान, पहले मैंने ही रोटी देखी थी, इससे रोटी पर पूरा हक मेरा बनता है ।
बंदर (काली बिल्ली से)	:	बोलो, तुमको क्या कहना है ?
काली बिल्ली	:	श्रीमान, पहले मैं झपटी थी रोटी लेने, इससे रोटी पर मेरा हक पूरा बनता है।
बंदर (सफेद बिल्ली से)	:	एक आँख से देखी थी, या दो आँखों से ?
सफेद बिल्ली	:	दो आँखों से, दोनों आँखों से।
बंदर (काली बिल्ली से)	:	एक टाँग झपटी थी या दोनों टाँगों से ?
काली बिल्ली	:	दो टाँगों से, दोनों टाँगों से।
बंदर	:	तुम दोनों का था गवाह भी ?
दोनों बिल्लियाँ	:	कहीं न कोई। कोई न कहीं।
बंदर	:	बात बराबर, बात बराबर। मेरा फैसला है कि रोटी तोड़-तोड़कर तुम्हें बराबर दे दी जाए। मेरे पास धरम-काँटा है।

(बंदर मेज के नीचे से तराजू निकालकर लाता है। दो हिस्सों में तोड़कर दोनों पलड़ों पर रखता है और उठाता है। एक पलड़ा नीचे रहता है, दूसरा ऊपर)

बंदर : यह टुकड़ा कुछ भारी निकला। इसमें से थोड़ा खाकर हल्का कर दूँ।

(फिर तराजू उठाता है। अब पहला पलड़ा ऊपर है और दूसरा नीचे)

बंदर : अब यह टुकड़ा भारी निकला। अब इसको थोड़ा खाकर हल्का कर दूँ।

(फिर तराजू उठाता है। अब पहला पलड़ा नीचे हो गया और दूसरा ऊपर)

बंदर : अब यह टुकड़ा भारी निकला। टुकड़े भी कितने खोटे हैं, एक-दूसरे को छोटा दिखलाने में ही लगे हुए हैं। मुँह थक गया बराबर करते-करते और तराजू उठा-उठाकर हाथ थक गया।

(बिल्लियों को बंदर की चालाकी का पता चल गया। हाथ मलती हुई बड़ी उदासी से एक-दूसरे को देखते हुए)

सफेद बिल्ली : आप थक गए, अब न उठाएँ और तराजू।

काली बिल्ली : बचा-खुचा जो उसको दे दें, हम आपस में बाँट खाएँगी।

बंदर : नहीं, नहीं, तुम फिर झगड़ोगी। मैं झगड़े की जड़ को ही काटे देता हूँ। बचा-खुचा भी खा लेता हूँ।

(इतना कहकर बची-खुची रोटी भी बंदर खा जाता है और तराजू लेकर भाग जाता है)

दोनों बिल्लियाँ : आपस में झगड़ा कर बैठीं, बुद्धि अपनी खोटी। अब पछताने से क्या होता, बंदर हड़पा रोटी।

हरिवंशराय बच्चन

अभ्यास

समझो

महक - खुशबू	हक -अधिकार
लपकना- कूदना	गवाह- साक्षी
फैसला - सुनवाई	तराजू- वजन करने का यन्त्र

१. देखें, तुमने क्या सीखा -

(क) दोनों बिल्लियाँ किसकी खोज में निकली भीं ?

(ख) रोटी की महक सबसे पहले किसे आई ?

(ग) रोटी कहाँ पर रखी थी ? उसे पहले कौन लेकर आया ?

(घ) बिल्लियों के झगड़े का निपटारा बन्दर ने कैसे किया ?

(ङ) आपस में झगड़ा करने से लाभ किसे होता है ?

२. केवल 'हाँ' या 'ना' में उत्तर दो :-

(क) रोटी पर अपना हक जमाने के लिए दोनों बिल्लियाँ आपस में लड़ पड़ी।

(ख) बिल्लियों के झगड़े का फैसला कुत्ते ने किया।

(ग) बन्दर ने रोटी को बराबर बाँटने के लिए रोटी को सिर पर रखा।

(घ) बिल्लियों को बेवकूफ बनाकर बन्दर ने पूरी रोटी खा ली।

३. इन वाक्यों को सजाकर लिखो-

(क) पास काँटा मेरे धरम है।

(ख) गए थक आप।

(ग) टूकड़ा अब भारी यह निकला।

(ङ) खाकर थोड़ा कर इसको दूँ हल्का।

४. जरा बताओ तो :

- तुम किस किससे लड़ते हो।
- दोस्त / सहेली से, पड़ोसियों से, सबसे, छोटे भाई, बहनों से, बड़ों से, किसीसे नहीं।
- बंदर ने रोटी बराबर बाँटने के लिए तराजू का इस्तेमाल किया। नीचे दी गई चीजों में से किसे तोला जा सकता है।

  पेड़, बिस्तर, मकान, तरबूज, काशीफल

- इस घटना पर एक कहानी लिखो। उसे अपनी कक्षा में सुनाओ।
- जैसे बिल्लियों को रोटी की खुशबू आई, वैसे तुम्हें किन-किन चीजों की खुशबू आती है ?

शेखीबाज मक्खी

एक था जंगल। उस जंगल में एक शेर भोजन करके आराम कर रहा था। इतने में एक मक्खी उड़ती-उड़ती वहाँ आ पहुँची। शेर ने दो तीन दिनों से स्नान नहीं किया था। इसलिए मक्खी शेर के कान के एकदम पास भिन-भिन-भिन करने लगी। शेर को बहुत मुश्किल से नींद आई थी। उसने पंजा उठाया। मक्खी उड़ गई... लेकिन फिर से शेर के कान के पास भिन-भिन- शुरू हो गई। अब शेर को गुस्सा आया।

वह दहाड़ा- अरे मक्खी, दूर हट। वरना तुझे अभी जान से मार डालूँगा। मक्खी ने धीरे से कहा- छिः... छि! जंगल के राजा के मुँह से ऐसी भाषा कहीं शोभा देती है?

शेर का गुस्सा बढ़ गया। उसने कहा - एक तो मुझे सोने नहीं देती, ऊपर से मेरे सामने जवाब देती है! चुप हो जा.... वरना अभी.....

मक्खी बोली- वरना क्या कर लोगे ? मैं क्या तुमसे डर जाऊँगी? मैं तो तुमसे भी लड़ सकती हूँ। हिम्मत हो तो आ जाओ ....!

शेर आग बबूला हो उठा। उसने कान के पास पंजा मारा। मक्खी तो उड़ गई पर कान जरा छिल गया। मक्खी उड़कर शेर की नाक पर बैठी तो उसने मक्खी को फिर पंजा मारा।मक्खी उड़ गई। अबकी बार शेर की नाक छिल गई।

मक्खी कभी शेर के माथे पर बैठती, कभी गाल पर तो कभी गर्दन पर।

7IVXU7

शेर पंजा मारता जाता और खुद को घायल करता जाता..... मक्खी तो फट से उड़ जाती।

अंत में शेर ऊब गया, थक गया। वह बोला- मक्खी बहन, अब मुझे छोड़ो। मैं हारा और तुम जीती, बस।

मक्खी घंमड में चूर होकर उड़ती-उड़ती आगे बढ़ी । सामने एक हाथी मिला। मक्खी ने कहा - अरे हाथी.... मुझे प्रणाम कर... मैंने जंगल के राजा शेर को हराया है। इसलिए जंगल में अब मेरा राज चलेगा। हाथी ने सोचा, इस पागल मक्खी से बहस में समय कौन बर्बाद करेगा।

हाथी ने सूँड़ ऊपर उठाकर मक्खी को प्रणाम किया और आगे बढ़ गया। सामने से आ रही लोमड़ी ने यह सब देखा। लोमड़ी मंद-मंद मुस्कराने लगी। इतने में मक्खी ने लोमड़ी से कहा- अरे ओ लोमड़ी, चल मुझे प्रणाम कर! मैंने जंगल के राजा शेर और विशालकाय हाथी को भी हरा दिया है।

लोमड़ी ने उसे प्रणाम किया। फिर धीरे से बोली -

धन्य हो मक्खी रानी, धन्य हो! धन्य है आपका जीवन और धन्य हैं आपके माता-पिता। लेकिन मक्खी रानी, उधर वह मकड़ी दिखाई दे रही है न, वह अक्सर आपको गाली दे रही है । उसकी जरा खबर लो न!

यह सुनकर मक्खी गुस्से से लाल हो उठी।

मक्खी बोली- उस मकड़ी को तो मैं चुटकी बजाते खत्म कर देती हूँ।

यह कहते हुए मकड़ी की तरफ झपटी और मकड़ी के जाले में फँस गई। मक्खी जाले से छूटने की ज्यों-ज्यों कोशिश करती गई त्यों-त्यों और भी अधिक फँसती गई... अंत में वह थक गई, हार गई। यह देखकर लोमड़ी मंद-मंद मुस्कराती हुई वहाँ से चलती बनी ।

योगेश जोशी

अभ्यास

समझो

शेखीबाज - अपनी बड़ाई करनेवाला	
वरना - नहीं तो	प्रणाम - नमस्कार
हिम्मत - साहस	विशालकाय - बड़े शरीर वाला
आग बबूला होना -अत्यधिक क्रोधित होना	अक्सर - प्राय :

१. देखें तुमने क्या सीखा -

(क) मक्खी ने शेर को किस तरह परेशान किया ?

(ख) शेर ने हार क्यों मान ली ?

(ग) मक्खी का घंमड़ क्यों बढ़ गया ?

(घ) मक्खी मकड़ी के जाल में कैसे फँस गई ?

२. इन वाक्यों को किसी और तरह से लिखो : (जैसे- जान से मार डालूँगा । मार डालूँगा जान से)

(क) धन्य हो मक्खी रानी।

(ख) शेर का गुस्सा बढ़ गया।

(ग) हिम्मत हो तो आओ।

(घ) एक था जंगल।

३. किसने किससे कहा :

(क) 'वरना तुझे अभी जान से मार डालूँगा।'

(ख 'मैं हारा और तुम जीती,बस।'

(ग) 'मैने जंगल के राजा को हराया है, मुझे प्रणाम कर।'

(घ) 'धन्य है आपका जीवन, धन्य है आपके माता-पिता।'

४. जरा सोचो तो :

- इस कहानी के और क्या क्या शीर्षक हो सकते हैं।
- मक्खी ने जब शेर को जगाया तो वह नाराज हो गया। तुम्हें कोई जब गहरी नींद से जगाता है, तुम क्या करते हो।
- शेर भोजन करने के बाद आराम कर रहा था। तुम खाना खाने के बाद करते हो ?
- अक्सर ————————————, कभी कभी——————————-।

माथापच्ची

काली बिल्ली बगीचे में अपने भाई-बहनों के साथ खेल रही थी। इतने में बंदर ने उसकी तस्वीर खींच ली। तस्वीर देखकर बताओ इनमें से काली बिल्ली कौन-सी है ?

7J5TVU

हिमालय

7JEPXH

युग युग से अपने पथ पर
देखो कैसे खड़ा हिमालय।

डिगता कभी न अपने प्रण से
रहता प्रण पर अड़ा हिमालय।

खड़ा हिमालय बता रहा है
डरो न आँधी पानी में।

डटे रहो अपने पथ पर
सब कठिनाई तूफानी में।

डिगो न अपने प्रण से तो
सबकुछ पा सकते हो प्यारे।

तुम भी ऊँचे बन सकते हो
छू सकते हो नभ के तारे।

सोहनलाल द्विवेदी

अभ्यास

समझो

डिगना - हट जाना

आँधी - तूफान, तेज हवा

पथ - रास्ता

प्रण - प्रतिज्ञा

नभ - आकाश

नभ के तारे छूना - असंभव कार्य को कर पाना

१. देखें तुमने क्या सीखा-

(क) युग युग से कौन खड़ा है ?

(ख) हिमालय खड़ा होकर क्या बाता रहा है ?

(ग) सबकुछ पाने का उपाय क्या है ?

२. हिमालय पर्वत के बारे में दो/ तीन पंक्तियाँ लिखे।

____

____

____

____

३. इनके अर्थ लिखो ____________

अपने प्रण से न डिगना ____________

नभ के तारे छूना ____________

ऊँचा बनना ____________

४. खाली जगहों को भरो ।

(क) युग युग से ....

......................खड़ा हिमालय।

(ख) डटे रहो अपने ....

.... तुफानी मेंझा ।

(ग) तुम भी ऊँचे ....

.... नभ के तारे।

४. वाक्य बनाओ ।

हिमालय -

प्रण -

नभ -

सबकुछ -

घास की रोटियाँ

7JNKZ5

साँझ हो रही थी। पक्षी अपने घोंसलों की ओर लौट रहे थे। सूरज डूबने ही वाला था। अरावली की पहाड़ियों में चारों ओर सन्नाटा छाया हुआ था।

महाराणा प्रताप एक चट्टान पर बैठे हुए थे और डूबते सूरज को देख रहे थे। उनके मन मे यह प्रश्न उठा- पूरा राजपुताना मुगलों ने जीत लिया, केवल मेवाड़ बच रहा है ; मेवाड़ की रक्षा मैं कर सकूँगा या मेवाड़ का सूरज सदा के लिए डूब जाएगा ?

महाराज विचारों में खो गए। तभी उनका कोई सौनिक आया और बोला : "महाराज! मुगलों के सौनिक चारों ओर से हमें घेर रहे हैं। वे आपकी खोज में है। हमें यह जगह जल्द छोड़ देनी चाहिए।"

महाराणा प्रताप गंभीर हो गए। सोचने लगे, हल्दीघाटी के युद्ध के बाद मैं इन पहाडियों में भटक रहा हूँ, गुफा में रात बिताता हूँ और फल-मूल खाता हूँ। महारानी और बच्चे कष्ट में हैं। उनका कष्ट अब सहा नहीं जाता।

सोचते- सोचते महाराज महारानी के पास पहुँचे। महारानी मे कहा :"आज खाने के लिए कुछ नहीं है। घास की कुछ रोटियाँ बनाई, जिन्हें बनबिलाव उठा ले गए। बच्चे भूखे रह गए। वे भूख से रो रहे हैं।"

महाराज चिंता में खड़े थे। फिर टहलने लगे। थोड़ी देर बाद बोले :"हम कठिनाइयों की दौर से गुजर रहे हैं। बाहर निकलने में खतरा है। आसपास की घास इकट्ठी कर फिर कुछ रोटियाँ बनाओ।"

महारानी ने घास इकट्ठी की, उससे रोटियाँ बनाईं और कटोरे में पानी ले आईं। बच्चों को खिलाती हुई बोलीं :"जल्द खा लो। झाड़ी से बनबिलाव निकलकर रोटियाँ फिर खींच न ले जाय।"

महाराणा प्रताप विचलित हो उठे। उन्होंने बड़ी-बड़ी विपत्तियाँ झेली थीं , पर यह विपत्ति उनकी सहनशक्ति के बाहर थी। आँखों से आँसुओं की धार फूट पड़ी। मन में विचारो की आँधी चलने लगी। वे सोचने लगे मेरा जीवन किसके काम आया ? मेरा राज्य पराधीन हो गया है। क्या मैं इसे स्वतंत्र नहीं करा पाऊँगा ?

बच्चे घास की रोटियाँ खाकर सो रहे थे। महारानी ने कहा :"रात हो चुकी है। आप दिन भर के थके-माँदे हैं। जल्द सो जाएँ।"

सब सो गए, पर महाराणा की आँखों में नीद कहाँ ? मेवाड़ को कैसे स्वतंत्र किया जाए, यही सोचते-सोचते रात कट गई।

महाराणा प्रताप भारत के ऐसे वीर थे,जिन्होंने मुगल हमलावरों से जमकर लोहा लिया । उनके छक्के छुड़ाए। वे मुगलों से बराबर लड़ते रहे। कभी जीते, कभी हारे। मगर उनके आगे सिर नहीं झुकाया। राजमहल छोड़ जंगल में रहे। घास की रोटियाँ खाई और बच्चों को वही खिलाया। लेकिन सर्वदा स्वतंत्र रहे। वे किसीसे हार मानने वाले नहीं थे।

अभ्यास

समझो

सौनिक - सिपाही	चट्टान - पत्थर
पराधीन - दूसरे के अधीन	चिंता - परेशानी
हमलावर - आक्रमणकारी	खतरा - विपत्ति

१. **देखें आपने क्या सीखा-**

(क) महाराणा प्रताप जंगल में क्या कर रहे थे ?

(ख) जंगल में राणा प्रताप अपने परिवार के साथ किस हाल में थे ?

(ग) राणा प्रताप के बच्चों को घास की रोटियाँ क्यों खानी पड़ रही थी ?

(ङ) राणा प्रताप रात भर क्यों नहीं सो सके ?

२. **दिए गए शब्दों की सहायता से खाली स्थान भरो।**

(के, को, में, पर, की)

(क) महाराणा प्रताप एक चट्टान ————-बैठे हुए थे।

(ख) महाराजा विचारों —————- खो गए।

(ग) बच्चे घास—————- रोटियाँ रखा रहे थे।

(घ) मेवाड़ ——— कैसे स्वतंत्र किया जाय।

(ङ) महाराज, रानी————- पास पहुँचे।

३. **पढ़ो, सामझो और लिखो**

निकलना - निकलो, निकलिए, निकले, निकलूँ

उठना-

आना-

सोचना-

४. **सही पढ़ो, सही लिखो**

विचलित, बच्चे, सहनशक्ति, स्वतत्र

कुछ करो

- हमारे देश में राणा प्रताप जैसे और भी महान व्यक्ति हुए हैं। ऐसे महान देश भक्तों की जीवनी लाकर पढ़ो और कक्षा में सबको सुनाओ।
- इस कथा को चित्र के माध्यम से अभिव्यक्त करो।

रास्ता ढूँढ़ो

यह मकड़ी उस रास्ते से जाना चाहती है, जिस पर चलकर वह जाल तक पहुँच सके वहाँ जाने के लिए १, २, ३ में से कौन-सा रास्ता ठीक रहेगा ?

7JXH1S

कौन

7K7D3F

किसने बटन हमारे कुतरे ?
किसने स्याही को बिखराया ?
कौन चट कर गया दुबक कर
घर-भर में अनाज बिखराया ?

दोना खाली रखा रह गया
कौन ले गया उठा मिठाई ?
दो टुकड़े तसवीर हो गई
किसने रस्सी काट बहाई ?

कभी कुतर जाता है चप्पल
कभी कुतर जूता है जाता,
कभी खलीता पर बन आती
अनजाने पैसा गिर जाता

किसने जिल्द काट डाली है ?
बिखर गए पोथी के पन्ने।
रोज टाँगता धो-धोकर मैं
कौन उठा ले जाता छन्ने ?

कुतर-कुतर कर कागज सारे
रद्दी से घर को भर जाता।
कौन कबाड़ी है जो कूड़ा
दुनिया भर का घर भर जाता ?

कौन रात भर गड़बड़ करता ?
हमें नहीं देता है सोने,
खुर-खुर करता इधर-उधर है
ढूँढ़ा करता छिप-छिप कोने ?

रोज रात-भर जगता रहता
खुर-खुर इधर-उधर है धाता
बच्चों उसका नाम बताओ
कौन शरारत यह कर जाता ?

सोहनलाल द्विवेदी

अभ्यास

समझो

कुतरना- काटना	रद्दी- अनावश्यक वस्तु
चट करजाना- खा लेना	ढूँढ़ना- खोजना
दुबककर- छिपकर	दुनिया- संसार

१. देखें तुमने क्या सीखा :

(क) शरारती जीव कौन है? उसने घर भर को कैसे परेशान कर रखा था ?

(ख) शरारती जीव रातभर क्या करता था ?

(ग) शरारती जीव ने बहुत सारे नुकसान किए हैं। वे क्या-क्या हैं उन्हें लिखो।

२. जो शब्द छूट गया है उसे जोड़कर वाक्य फिर से लिखो-

(क) किसने हमारे —— कुतरे।

______________________________ ।

(ख) किसने जिल्द काट —— है।

______________________________ ।

(ग) बच्चों उसका ———बताओ।

______________________________ ।

(घ) रोज रात भर ——— रहता।

______________________________ ।

३. (क) बताओ कौन कौन से जानवर :

रँभाते है : ______________________________ ।

मिमियाते है : ____ ।

गुर्राते हैं : ____ ।

दहाड़ते हैं : ____ ।

(ख) चुहे के अलावा और कौन कौन से अनचाहे जन्तु तुम्हारे लिए परेशानी का कारण बनते हैं? उनके नाम लिखो-

__________ __________ __________ __________

कुछ करें

- अपने मित्र को एक पत्र लिखकर बताओ कि चूहे तुम्हें किस तरह परेशान करते हैं।

अर्जुन का अभ्यास

बहुत समय पहले की बात है। अर्जुन नाम का एक राजकुमार था। उसके पिता राजा पांडु इसी देश के राजा थे। अर्जुन के चार भाई और थे। ये पाँचों भाई पांडव कहलाते थे और गुरु द्रोण से शिक्षा प्राप्त करते थे। इनके साथ-साथ गुरु द्रोण कौरव-पुत्रों को भी शिक्षा देते थे।

धनुष बाण चलाने में अर्जुन सबसे आगे था। गुरु उसे जो भी सिखाते वह बड़े मन से सीखता।

एक दिन गुरु द्रोण ने अर्जुन को निशाना साधते देखा। एक के बाद एक अर्जुन ने कई बाण छोड़े। हर बाण को ठीक निशाने पर लगता देख, गुरु अपने आप को रोक न सके। बोले, ''वाह-वाह, अर्जुन! यदि इसी तरह अभ्यास करते रहे तो एक दिन तुम्हारा बहुत नाम होगा।''

अर्जुन ने गुरु को देख एक बाण उनके चरणों में छोड़ा। यही उनका प्रणाम था। द्रोण फिर बोले- अर्जुन! मैं तुम्हें अँधेरे में बाण चलाना सिखाऊँगा। तुम केवल ध्वनि सुनकर ही बाण छोड़ोगे और वह सीधे निशाने पर लगेगा।

''गुरुदेव ! ऐसा संभव नहीं है। केवल आवाज सुनकर अँधेरे में कौन तीर चला सकता है! कहीं निशाना चूक गया तो...''

द्रोण ने कुछ उत्तर नहीं दिया। कुछ सोचने हुए वे तेजी से चलने लगे। अर्जुन पीछे-पीछे था।

दो दिन बीत गए। रात्रि का समय था। राजकुमार आश्रम में भोजन कर रहे थे। अचानक चारों कोनों पर जलते दीपक बुझ गए। पर राजकुमार भोजन करते रहे। भीम के मुँह से निकली चप-चप की आवाजों से पता चल रहा था कि वह बड़े स्वाद से खा रहा है।

द्रोण ने पूछा- भीम ! तुम्हारा भोजन तुम्हारे मुँह में ही जा रहा है न ?

7KG953

भीम ने आश्चय से कहा- जी हाँ , गुरुदेव !

अब द्रोण ने अर्जुन से पूछा-अर्जुन, अँधेरा हो गया है। क्या तुम अपना भोजन सीधे मुँह तक ही ले जा रहे हो ? इधर-उधर नहीं ?

अर्जुन ने अचंभे से कहा- इधर-उधर क्यों गुरुदेव, मैं तो इसे सीधा मुँह में ही डाल रहा हूँ।

''पर वह कैसे ?'' अगला प्रश्न था।

अर्जुन आश्चर्यचकित था कि आज गुरुदेव कैसे प्रश्न पूछ रहे है। उसने उत्तर दिया- गुरुदेव ! अभ्यास से। मैं प्रतिदिन भोजन करता हूँ; इसलिए अभ्यास से भोजन सीधा मुँह में ही जाता है।

गुरु बोले-ठीक इसी तरह अभ्यास करने पर तुम अँधेरे में भी सही निशाना लगा सकोगे। ध्वनि तुम्हारी सहायक होगी। समझे !

अभ्यास

समझो-

बाण	-	तीर
निशाना	-	लक्ष्य
अभ्यास	-	किसी काम को बारबार लगन से करना
ध्वानि	-	आवाज
अचंभा	-	हैरानी
संभव	-	जो हो सके

१. देखें तुमने क्या सीखा-

(क) कौन पांडव कहलाते थे ?

(ख) गुरु द्रोण ने किन्हें शिक्षा दी थी ?

(ग) द्रोण ने अर्जुन की प्रशंसा क्यों की ?

(घ) अर्जुन ने द्रोण के कदमों के पास तीर क्यों छोड़ा ?

(ङ) द्रोण ने अर्जुन को कैसे समझाया कि वह अँधेर में भी तीर चला सकता है ?

२. किसने कहा और क्यों कहा-

(क) 'तुम्हें अँधेर में बाण चलाना सिखाउंगा'।

(ख) 'कहीं निशाना चूक गया तो...'।

(ग) 'गुरुदेव! अभ्यास से'।

(घ) 'तुम्हारा भोजन तुम्हारे मुँह में जा रहा है न' ?

३. पढ़ो , समझकर अर्थ लिखो।

(क) निशाना ——————। (ख) स्वर ———-।

(ग) शिक्षा ———————-। (घ) दीया———।

४. कुछ करो

- अर्जुन की तरह एकलव्य भी एक बड़ा धर्नुधर था। उसकी कथा को पढ़कर उसपर एक कहानी लिखो।
- पाण्डु पुत्रों के नाम मालूम करो। उसे बड़े से छोटे क्रम में अपनी अभ्यास पुस्तिका में लिखो।

मन के भोले भाले बादल

झब्बर-झब्बर बालों वाले
गुब्बारे से गालों वाले
लगे दौड़ने आसमान में
झूम-झूम कर काले बादल।

कुछ-जोकर से तोंद फुलाए
कुछ हाथी - से सूँड़ उठाए
कुछ ऊँटों - से कूबड़ वाले
कुछ परियों - से पंख लगाए।

आपस में टकराते रह-रह
शेरों से मतवाले बादल।

कुछ तो लगते हैं तूफानी
कुछ रह-रहकर करते शैतानी
कुछ अपने थैलों से चुपके
झर-झर-झर बरसाते पानी

नहीं किसी की सुध कुछ-भी
ढोलक-ढोल बजाते बादल।

रह- रहकर छत पर आ जाते
फिर चुपके ऊपर उड़ जाते
कभी-कभी जिद्दी बन करके
बाढ़ नदी-नालों में लाते

फिर भी लगते बहुत भले हैं।
मन के भोले-भाले बादल

कल्पनाथ सिंह

अभ्यास

समझो-

तोंद - पेट	जिद्दी- अकड़ दिखानेवाली
चुपके से- धीरे से	भले- अच्छे
शैतान- दुष्ट	भोले - सरल

१. देखें तुमने क्या सीखा :-

(क) आसमान में दौड़नेवाले बादलों का रूप रंग कैसा है ?

(ख) बादल तूफानी क्यों लगते हैं ?

(ग) तुम्हें बादल भले क्यों लगते हैं ?

२. किसका किसके साथ संबंध है-

१. जोकर - से	१. सूँड़ उठाए
२. हाथी-से	२. कूबड़ वाले
३. ऊंटो - से	३. पंख फैलाए
४. परियों - से	४. तोंद फुलाए

३. नीचे दिए गए शब्दों को वर्णमाला के क्रम से सजाकर लिखो-

हाथी, किसी, ढोल, बादल,

मतवाले, जोकर, छत, दौडने

४. कैसे कैसे बादल

तरह तरह के बादलों के चित्र बनाओ

जोकर से तोंद फुलाए **शैतानी करते बादल**

थैलों से पानी बरसाते बादल

कैसे कैसे योग

बादलों की तरह तुम्हें अलग अलग आकार के लोग दिखाई देते होंगे। जैसे-कोई गोरा तो कोई काला। कोई पतला तो। कोई मोटा। कोई लंबा तो कोई ठिगना। तुम अपने आसपास रहनेवाले सब को देखो और एक कविता लिखो।

बाजि राउत

7KZ18D

बच्चो !

तुम जानते हो कि भारत पर अंग्रेजों ने लगभग दो सौ वर्षों तक शासन किया। उस शासन के दौरान उन्होंने भारतीयों पर अनेक अत्याचार किए। भारतीय उनके शासन से तंग आ चुके थे। धीरे धीरे जनता ने उनके अत्याचार का विरोध करना शुरू किया। सभी लोग एक आजाद भारत को देखना चाहते थे। यह विरोध उन्हें मंहगा पड़ा। जो अंग्रेजों का विरोध करता था उसे जेल में भर दिया जाता था। कभी फांसी पर लटका दिया जाता तो कभी उसे गोली से उड़ा दी जाती थी। लोकिन भारतवासी हार नहीं मानें।

देश के कोने कोने से इन विदेशी शासकों के अन्याय के विरुद्ध आवाज उठने लगी। ओड़िशा से भी देश को स्वाधीन करने के लिए लोग आगे आए। इन सबमें एक छोटा सा लड़का भी उभर कर आया। उसका नाम था बाजि राउत। वह ढेंकानाल जिले के एक गरीब खंड़ायत परिवार में पैदा हुआ था। सन् १ ९ ३ ८ की बात है, जब वह सिर्फ बारह वर्ष का था। नदी में नाव चलाने जाता था।

उन दिनों अंग्रेजो के विरुद्ध गड़जात प्रजा आन्दोलन हुआ। उसमें यह तय हुआ कि अंग्रेज सिपाहियों को ब्राह्मणी नदी पार करने नहीं दिया जाएगा। यदि वे नदी पारकर आ जाते हैं तो गड़जात प्रजा आन्दोलन सफल नहीं होगा। ब्राह्मणी नदी के घाट की पहरेदारी इस बारह वर्ष के छोटे से बालक ने की ।

बाजि राउत में अदम्य साहस था। उसने पूरे आत्मविश्वास के साथ नदी के घाट की पहरेदारी की। जब अंग्रेज सिपाही आए तो उन्होने बाजि राउत से नदी पार करवा देने को कहा। बाजि राउत ने

उन्हें नदी तो पार नहीं करवाया। उसने किसीकी परवाह न करते हुए यह कहा कि,जब तक वह घाट की पहरेदारी कर रहा है तब तक कोई अंग्रेज सैनिक ब्राह्मणी नदी नहीं पार कर सकेगा। स्वाभाविक है बाजि राउत की यह अंग्रेजों के अहंकार को ठेस लगनेवाली बात थी। अंग्रेजों ने फिर से अपनी बात दोहराई। इस बार भी वही उत्तर मिला। अंग्रेजों ने उसे गोली से उड़ा देने की धमकी दी। बाजि राउत टस से मस नहीं हुआ। ऊँची आवाज में अंग्रेजों का विरोध करता रहा। अंत में वह अंग्रेजों के क्रोध का शिकार बना। अंग्रेजों के सिपाहियों ने बाजि राउत पर गोली दाग दी और वह हमेशा के लिए शहीद हो गया। कटक के काठजोड़ी नदी के किनारे उसका अंतिम संस्कार किया गया। उसका शरीर तो नष्ट हो गया पर वह हर ओड़िशावासी के हृदय में अपने लिए स्थान बना गया।

मन करता है

7L8WA1

मन करता है सूरज बनकर
आसमान में दौड़ लगाऊँ।
मन करता है चन्दा बनकर
इस धरती को राह दिखाऊँ।

मन करता है चिड़िया बन कर
दूर-दूर तक उड़ता जाऊँ।
मन करता है कोयल बनकर
सबको मीठे गीत सुनाऊँ।

मन करता है किताब उठाकर
पढ़ता जाऊँ पढ़ता जाऊँ।
मोटी मोटी कॉपी में सब
लिखता जाऊँ लिखता जाऊँ।

मन करता है चुपचाप बैठ
कक्षा में सब सुनता जाऊँ ।
मन करता है आगे चलकर
देश की सेवा में लग जाऊँ ।

डॉ. स्मरप्रिया मिश्र

अभ्यास

सामझो-

सूरज - सूर्य	राह - रास्ता
चन्दा- चाँद	चिड़िया- पक्षी
आसमान- आकाश	मीठे - मधुर

१. देखें तुमने क्या सीखा-

(क) तुम्हारा क्या-क्या करने को मन करता है और क्यों ?

(ख) तुम्हारा सूरज बनने को क्यों मन करता है ?

(ग) मन करता है चन्दा बनकर
इस धरती को राह दिखाऊँ।
चन्दा धरती को राह कैसे दिखाता है ?

(घ) क्या-क्या करके हम सबकी सहायता कर सकते हैं ?

(ङ) कोयल की आवाज कैसी होती है ?
(क) टर्र, का का, टीवी टीवी, कुहू-कुहू

(च) पढ़ने लिखने से हमें क्या फायदा होगा ?

२. कौन क्या क्या करता है - मिलाओ !

क	ख
१. सूरज	१. मीठे गीत गाती है।
२. चाँद	२. दूर दूर तक उड़ती है।
३. चिड़िया	३. आसमान में दौड़ लगाता है।
४. कोयल	४. शीतल किरणों से राह दिखाती है।

३. सही उत्तर पर (✓) चिन्ह लगाओ।

(क) सूरज के आसामान में दौड़ने का मतलब है।
(i) सुबह-शाम का होना (ii) सूरज का जोर जोर से दौड़ना।

सोचो और बताओ

- चाँद आसामान में क्या करता होगा ?
- चिड़िया किसकी सहायता से दूर दूर तक उड़ती है ?
- कोयल जैसी मीठी आवाज और किसकी है ?
- तुमने किन किन जानवरों की आवाजें सुनी है - लिखो।

  १———— २————— ३————— ४————-
- कोयल जैसी एक और काली चिड़िया का नाम लिखो।

पता करो

- तुम्हारे घर और स्कूल में क्या क्या करने को मन करता है ?

घर		स्कूल	

पौधों का जीवन

7LHSBN

रात के नौ बजे थे। बिजली न होने के कारण सब आँगन में बैठे बातें कर रहे थे। अचानक काजल क्यारी की बेल को पकड़कर हिलाने लगी।

माँ ने मना किया, ''बेटी नहीं, इस समय पौधों को नहीं छेड़ना चाहिए। पौधे सो गए हैं।''

''पौधे भी कहीं सोते हैं ?'' काजल बोली और डाली को हिलाती ही रही।

''हाँ बेटी, पौधे भी हमारी तरह सोते और जागते हैं, साँस लेते हैं, खाना खाते हैं, पानी पीते हैं। हाँ, अब तुम बेल को हिलाना बंद करो,'' पिताजी बोले।

पंकज भी अपने पिता की बात सुन रहा था। उसे उनकी बात रुचिकर लगी। वह उठकर पिता के पलंग पर आ बैठा।

''कैसे ? पिता जी ? पौधे कैसे खाते-पीते हैं, सोते हैं, जागते हैं ? '' उसने पूछा।

''हाँ -हाँ ! बताइए ना !'' काजल भी डाल को हिलाना छोड़कर पिता के पास चली आई।

पिताजी बताने लगे, ''पहले सभी लोग यह समझते थे कि पौधे निर्जीव होते हैं किंतु बाद में वैज्ञानिक प्रयोगों से यह सिद्‌ध हुआ कि पौधों में भी जीवन होता है।''

''काजल, तुम गुलाब के पौधे में से सुंदर गुलाब तोड़ लेती हो। तुम्हें इसमें मजा आता है। किंतु तुम्हारी इस शैतानी से वह गुलाब का फूल बेचारा तो मर ही जाता है। तुम देखोगी, थोड़ी देर बाद ही वह मुरझा जाता है, उसकी पंखुड़ियाँ गिरने

लगती हैं। जानती हो क्यों ? जब वह डाली पर था तो उसे भोजन मिलता था। डाली से अलग होकर गुलाब को भोजन नहीं मिल पाता और वह निर्जीव-सा हो जाता है।''

''पंकज, तुमने तो अपनी विज्ञान की पुस्तक में पढ़ा था कि पौधे के छह भाग होते हैं- जड़, तना, शाखाएँ, पत्ते, फूल और फल।''

''जड़ें पौधे के लिए वही काम करती हैं जो तुम्हारा मुँह तुम्हारे लिए करता है। वह धरती से खनिज और पानी चूसती हैं और तने की ओर धकेलती हैं। जड़ें पौधे को मिट्टी में मजबूती से गाड़कर भी रखती हैं।''

दोनों बच्चे पिता जी की बातें बहुत ध्यान से सुन रहे थे।

''अच्छा पिता जी ! पौधे साँस कैसे लेते हैं ?'' काजल ने पूछा।

''पत्ते में छोटे-छोटे छेद होते हैं, उनके द्वारा ही पौधे साँस लेते हैं। यदि तुम किसी पौधे को काँच के बरतन से इस तरह ढँक दो कि उसे हवा न मिले तो तुम देखोगे कि कुछ समय बाद की वह पौधा मुरझा जाएगा। पत्ते ही सूर्य की गरमी में हवा से कार्बन-डाइऑक्साइड लेकर हरे पन्तों की सहायता से पौधे के लिए भोजन बनाने का काम करते हैं।''

''पिताजी, कार्बन-डाइऑक्साइड क्या गंदी हवा को कहते हैं ?'' पंकज ने पूछा।

''तुम ठीक कहते हो, लेकिन पौधों के जीवन के लिए यही आवश्यक है। इस तरह से पौधे हवा में से कार्बन-डाइऑक्साइड ग्रहण कर, उसे हमारे लिए शुद्ध करने का काम भी करते हैं, '' पिता जी बोले।

''पिताजी ! तना और शाखाएँ पौधे के लिए क्या करती हैं ?'' पंकज ने फिर पूछा।

''तना और शाखाएँ पौधे को आकार प्रदान करते हैं तथा पत्तों द्वारा बनाया भोजन नीचे जड़ों तक, और जड़ों द्वारा चूसे गए खनिज और पानी को पत्तों तक पहुँचाते हैं। शाखाएँ पत्तों को सूर्य की ओर उन्मुख भी किए रहती हैं, '' वे समझाने लगे।

''पत्तों द्वारा बनाया गया भोजन भी जड़ों, शाखाओं, फलों और बीजों के रूप में एकत्र हो जाता है और इन्हें हम खाते भी हैं।''

''क्या हम जड़ भी खाते हैं ?'' काजल ने हैरानी प्रकट करते हुए कहा।

''हाँ, चुकंदर, मुली, गाजर, शलगम- पौधे की जड़ों के ही रूप हैं।''

''गन्ना, कमल-ककड़ी पौधे के तने का रूप हैं,'' माँ ने बातचीत में भाग लेते हुए कहा।

''पत्ते तो साग के रूप में खाते ही हैं- जैसे मेथी, पालक, सरसों, चने के पत्ते, चौलाई के पत्ते आदि। कुछ पौधों के फल भी खाए जाते हैं, और कुछ के बीज। बताओ तो कौन से पौधों के फल, सब्जी के रूप में खाते हैं ?'' माँ ने पूछा।

सवाल सरल था फिर भी बच्चे उसका जवाब नहीं दे पाए।

''देखो, काशीफल तो फल कहलाता ही है। टमाटर, घीया, तोरी, भिंडी भी पौधों के फल ही होते हैं। फल अपने अंदर बीज को समेट कर रखते हैं।''

''पिताजी ! आपने यह तो बताया नहीं कि हम बीज किन पौधों के खाते हैं ?'' पंकज बोला।

''सारी दालें पौधों के बीज ही तो होते हैं। सरल उदाहरण लेना चाहो तो मटर की फली, लोबिया, सेम, गवार की फली का नाम भी ले सकते हो।'' माँ ने बताया।

इतने में बिजली आ गई। माँ उठकर रसोईघर में चली गई।

पिताजी ने समझाया, ''वनस्पति जगत पर हमारा जीवन निर्भर है किंतु हमें व्यर्थ में फूलों और पौधों को तोड़ना नहीं चाहिए। तुमने देखा है कैसे माली पौधों को अपने बच्चों के समान प्यार करता है, उनकी देखभाल करता है। हमें भी उसकी तरह पेड़ -पौधों की देखभाल करनी चाहिए।''

''खाना लग गया है। अब जल्दी से अंदर आकर खा लो। कहीं बिजली फिर से न चली जाए।'' माँ की आवाज आई तो बच्चे उठकर कमरे की ओर चल दिए किंतु दोनों अभी भी पौधों के विषय में ही सोच रहे थे।

अभ्यास

समझो-

रुचिकर - मनोरंजक
कार्बन - डाइऔक्साइड- दूषित हवा
उन्मुख - मुख ऊपर किए हुए
वनस्पति- पेड़- पौधे
निर्जीव- बेजान, मृत
हरीत्तक - पौधे के हरे तत्व
वैज्ञानिक - विज्ञान का
रौंदना- पैरों के नीचे कुचलना

१. देखें तुमने क्या सीखा :

(क) रात के नौ बजे घर में सब लोग क्या कर रहे थे ?

(ख) रात को पौधों को क्यों नहीं छेड़ना चाहिए ?

(ग) पौधों में भी जीवन होते हैं - कैसे ?

(घ) फूल तोड़ने के कुछ देर बाद मुरझा क्यों जाते हैं ?

(ङ) पौधों के कितने भाग होते हैं और वे क्या क्या करते हैं ?

(च) पेड़ में पत्तों का क्या काम है ?

(छ) जड़ पौधों के लिए क्या काम करती है ?

(ज) कार्बन- डाइऑक्साइड पौधों के लिए क्यों आवश्यक है ?

(झ) पौधे के तने के रूप कौन कौन से हैं जिन्हें हम खाते हैं ?

(ञ) किन किन पत्तों को हम 'साग' के रूप में खाते है ?

(ट) किन फलों के पौधों को हम सब्जी के रूप में खाते हैं ?

(ठ) किन किन पौधों के बीज खाने के काम आते हैं ?

(ड) हमें व्यर्थ फूलों और फलों को क्यों नहीं तोड़ना चाहिए ?

२. (क) इन वाक्यों के पढ़ो, समझो और लिखो

(i) पौधे सो गए हैं ।

(ii) पौधे भी क्या सोते हैं ?

(iii) पिताजी ! हम किन पौधों के बीज खाते हैं?

पहले वाक्य में साधारण कथन है। दूसरे वाक्य में प्रश्न किया गया है। तीसरे वाक्य में पहले सम्बोधन किया गया है फिर प्रश्न पूछा गया है।

(ख) निम्नलिखित वाक्यों में उचित विराम चिह्न लगाओ।

(i) इतने में बिजली आ गई

(ii) किन फलों को हम सब्जी के रूप में खाते हैं

(iii) ऐ काजल खाना खाने क्यों नहीं आती

(ग) एक पलंग - दो पलंग

एक पेड़ - पाँच पेड़

एक वृक्ष- चार वृक्ष

एक बंदर - तीन बंदर

इन शब्दों के एक वचन और बहुवचन के रूप समान है।

इसी तरह बाघ, दिन, साधु, राजा, फूल आदि के बहुवचन रूप भी वही होते हैं।

३. सही पढ़ो और सही लिखो

निर्जीव, वैज्ञानिक, पौधे, कार्बन-डाइऑक्साइड, हरीत्तक, ग्रहण, प्रकार, उन्मुख, वनस्पति

४. शब्दों का क्रम ठीक करके सार्थक वाक्य बनाओ।

(क) उसका / बच्चे / नहीं / जबाव / सके / दे।

(ख) में / इतने / आ / बिजली / गई।

(ग) जल्दी / खा / अब / लो / अन्दर / आकर / से ।

५. कुछ करो

- दुनिया में अगर पेड़ न होते तो हमें किन किन परेशानियों से गुजरना पड़ता ? सोचकर अपनी कक्षा में दोस्तों को बताओ।
- एक पेड़ का चित्र बनाकर उसमें रंग भरो।

राम का राज्याभिषेक

7LRNDB

विभीषण चाहते थे के राम कुछ दिन लंका में रुक जाएँ । नई लंका में । उनकी लंका में । उन्होंने अपनी इच्छा राम को बताई । उसका कारण भी । ''मैं चाहता हूँ कि आप कुछ दिन यहाँ विश्राम कर लें ।युद्ध कीथकान उतर जाएगी । वैसे इसमें मेरा स्वार्थ भी है । आपकी रीति-नीति सीखने का अवसर मुझे मिलेगा । आपने यह नगरी देखी भी नहीं है'' ।

''यह संभव नहीं है, मित्र ?" राम ने कहा । वनवास के चौदह वर्ष पूरे हो गए हैं । मैं तत्काल अयोध्या लौटना चाहता हूँ । भरत मेरी प्रतीक्षा कर रहे होंगे । जाने में विलंब हुआ तो वे प्राण दे देंगे । उन्होंने प्रतिज्ञा की है । मैं उनकी प्रतिज्ञा से बँधा हूँ ।''

विभीषण राम से अलग नहीं होना चाहते थे । उनका अनुरोध राम ने अस्वीकार कर दिया। पर वे निराश नहीं थे । इस बार उन्होंने एक नया प्रस्ताव रखा । ''मेरी इच्छा है कि मैं आपके राज्याभिषेक में उपस्थित रहूँ । मुझे अपने साथ चलने की अनुमति दें ।''

राम ने उनका आग्रह स्वीकार कर लिया । बोले, '' आप हमारी यात्रा की व्यवस्था कर दें ।"

राम ने विभीषण की विनती मान ली तो सुग्रीव और हनुमान आगे आए । राम ने उन्हें भी अयोध्या आमंत्रित किया । विभीषण का पुष्पक विमान उन्हें ले जाने के लिए तैयार था ।

विमान के उड़ान भरने तक वानर सेना वहीं रही । विमान जाने के बाद वे कुदते-फाँदते किष्किंधा की ओर चल पड़े । विभीषण ने अपने कोषागार से उन्हें रत्नाभूषण दिए थे । उनकी वर्षा की थी , उसी विमान से । वानरों के लिए यह मनोरंजन था । जिसे जो मिला, लूटा ।

विमान लंका से चला । उड़ान भरने के बाद उसने उत्तर दिशा पकड़ी । जिधर अयोध्या नगरी थी । राम सीता के साथ बैठे थे । मार्ग में पड़नेवाले प्रमुख स्थान बताते जा रहे थे । रावण सीता का

हरण कर उन्हें उसी मार्गमें लाया था, पंचवटी से । उस समय सीता को वे स्थान ठीक सो मलूम नहीं थी स्थानों के नाम उन्हें ज्ञात नहीं थे ।

पहले रणभूमि पड़ी । फिर वह पुल, जिसे नल और नील ने बनाया था । सेतुबंध । किष्किंधा रास्ते में था । राम ने सीता को एक पतली, चमकती हुई रेखा दिखई ।''सीते ! देखो, यह गोदावरी नदी है । ऊँचाई से इतनी छोटी दिख रही है । इसी के तट पर पंचवटी है ।

गंगा-यमुना के संगम पर ऋषि भरद्वाज का आश्रम था । विमान वहाँ उतरा । सबने रात वहीं बिताई । ऋषि का आग्रह था । राम उसे टाल नहीं सके । वहीं से उन्होंने हनुमान को अयोध्या भेजा । भरत को उनके आगमन की पूर्व सूचना देने के लिए ।

राम सीधे अयोध्या नहीं जाना चाहते थे । उनके मन में एक प्रश्न था । एक संशय । चौदह वर्ष की अवधि कम नहीं होती । कहीं इस अवाधि में भरत को सत्ता का मोह तो नहीं हो गया ?

हनुमान को अयोध्या भेजते हुए उन्होंने यह प्रश्न रखा था । कहा, ''हे वानर शिरोमणि, आप भरत को मेरे आने की सूचना दीजिएगा । ध्यान से देखिएगा कि यह समाचार सुनकर उनके चेहरे पर कैसे भाव आते हैं ? यदि भरत को इस सूचना से प्रसन्नता नहीं हुई तो मैं अयोध्या नहीं जाऊँगा । भरत राजकाज सँभालें, इसमें मुझे कोई आपत्ति नहीं ।''

हनुमान वायु वेग से चले । जैसे उड़ रहे हों । वहाँ से नंदीग्राम पहुँचे । उन्होंने भरत से कहा, "श्रीराम के वनवास की अवधि पूर्ण हो गई है । वे लौट रहे हैं । प्रयाग पहुँच चुके हैं । मैं उन्हीं की आज्ञा से आपके पास आया हूँ ।"

भरत की प्रसन्नता का ठिकाना न रहा । आँखों में खुशी के आँसू थे । वे बार-बार हनुमान को धन्यवाद दे रहे थे । उनके चेहरे पर केवल एक भाव था । प्रसन्नता । हनुमान उनसे विदा लेकर आश्रम लौट आए । राम के पास ।

अगली सुबह प्रयाग से शृगवेरपुर होते हुए राम का विमान कुछ ही देर में सरयू नदी के ऊपर पहुँच गया । दूर अयोध्या नगरी के भवनों के शिखर दिखाई देने लगे । सबने अयोध्या को प्रणाम किया ।

उधर भरत से सूचना पाकर अयोध्या में उत्सव की तैयारियाँ होने लगी । नगर को सजाया गया । शत्रुघ्न राज्याभिषेक की व्यवस्था में लग गए । महल से तीनों रानियाँ नंदीग्राम के लिए निकल पड़ी । कौशल्या सबसे आगे थीं । उन्हें पता था कि राम पहले भरत से भेंट करेंगे ।

राम का विमान नंदीग्राम मे उतरा । उनका भव्य स्वागत हुआ । आकाश राम के जयघोष से गूँज उठा । राम ने विमान से उतरकर भरत को गले लगाया । माताओं को प्रणाम किया । भरत भागते हुए आश्रम के भीतर गए । राम की खड़ाऊँ उठा लाए । जिसे सिंहासन पर रखकर उन्होंने चौदह वर्ष राजकाज चलाया था । झुककर अपने हाथों से राम को पहनाई । मिलन का यह दृश्य अद्भूत था । सबके चेहरे पर प्रसन्नता थी । सबकी आँखें खुशी के आँसुओं से नम थीं ।

राम-लक्ष्मण ने नंदीग्राम में तपस्वी बाना उतार दिया । दोनों को राजसी वस्त्र पहनाए गए । जन समूह राम की जयकार करता अयोध्या के लिए चला । शोभायात्रा की छटा देखने योग्य थी । नंदीग्राम से चलने के पूर्व राम ने पुष्पक विमान को कुबेर के पास भेज दिया । वह विमान कुबेर का ही था । रावण ने उसे बलात छीन लिया था ।

भरत ने अयोध्या का राज्य राम को नंदीग्राम में ही लौटा दिया था । राजमहल पहुँचे तो मुनि वशिष्ठ ने कहा, ''कल सुबह राम का राज्याभिषेक होगा"। इसकी तैयारी शत्रुघ्न ने पहले ही कर दी थी । पूरा नगर सजाया गया । दीपों से जगमगा रहा था । फूलों से सुवासित था । वाद्ययंत्रों से झंकृत था । पूरे चौदह वर्ष के बाद ।

अगले दिन मुनि वशिष्ठ ने राम का राजतिलक किया । राम और सीता सोने के रत्नजड़ित सिंहासन पर बैठे । लक्ष्मण, भरत और शत्रुघ्न उनके पास खड़े थे । हनुमान नीचे बैठ गए । माताओं ने आरती उतारी । मंगलाचार हुआ । शुभ गीत गाए गए । राम ने सीता को एक बहुमूल्य हार दिया । प्रजाजनों को उपहार दिए । अनेक वस्तुएँ प्रदान कीं ।

सीता ने अपने गले का हार उतारा । वे दुविधा में थीं । किसे दें ? दुविधा राम ने दूर की, ''जिस पर तुम सर्वाधिक प्रसन्न हो, उसे दे दो !" सीता ने वह हार हनुमान को भेंट कर दिया । भक्ति और पराक्रम के लिए ।

कुछ दिनों में सारे अतिथि एक-एक कर चले गए । विभीषण लंका लौटे । सुग्रीव ने किष्किंधा की ओर प्रयाण किया। ऋषि-मुनि अपने आश्रम चले गए । हनुमान कहीं नहीं गए । रामके दरबार में ही रहे ।

राम ने लंबे समय तक अयोध्या पर राज किया । उनके राज में किसी को कष्ट नहीं था । सब सुखी थे । भेदभाव नहीं था । कोई बीमार नहीं पड़ता था । खेत हरे-भरे थे । पेड़ फलों से लदे रहते थे । राम न्यायप्रिय थे । गुणों के सागर थे । उनका राज्य राम राज्य था । आज तक सभी उच्छाई के प्रतीक के रूप मे राम राज्य का उदाहरण देते हैं ।

सर्वेषां नो जननी

सर्वेषां नो जननी
भारत धरणी कल्पलतेयम्
जननी दत्सल-तनय गणैस्तत्
सम्यक् शर्म विधेयम्
सर्वेषां......
हिमगिरि-सीमन्तित-मस्तकमिदम्
अम्बुधि-परिगत-पार्श्वम्
अस्मद जन्मदमन्मदमनिशं
श्रौतपुरातनमार्षम्
विजनित हर्ष भारतवर्षम्
विश्वोत्कर्षर्निदानम्
भारतशर्मणि कृतमस्माभि:
नवमितमैदयविधानम्-
सर्वेषां....

भारतपङ्कजदलमिदमुत्कल
मण्डलभितिदिदितं यत्
तस्यकृते दयमत्र समेता
विहतित्रोत्कल संसत्
भारतमेका गतिरस्माकं
नापरस्ति भुवि नाम
सर्वादौ परिषत् कर्मणि तत्
भारतेमव नमामः ।।